



प्रभात



छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

www.subhartimedia.com

लखनऊ, बुधवार, 29 अप्रैल 2020, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 08

उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड से प्रकाशित

दुनिया से नौ दिसंबर और भारत से 26 जुलाई तक खत्म होगा कोरोना वायरस

-8

प्रभात

बाराबंकी-सुलतानपुर-गोण्डा-अमेठी-कुशीनगर-लखनऊ

बुधवार
लखनऊ, 29 अप्रैल 2020

6

टूटा एक और बर्फ का पहाड़, बढ़ा खतरा

लखनऊ-प्रभात

वर्ष 2020 दुनिया में काल का समय हो गया है। इस समय जब दुनियाभर में कोरोना महामारी की मुसीबत से लगभग 31 लाख से अधिक लोग संक्रमित हैं और करीब 2 लाख से अधिक काल के गाल में जा चुके हैं। इन दुर्लभ हालातों में अब दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बर्फ का पहाड़ आइसबर्ग टूट कर खुले समुद्र में तैर रहा है और खतरे का सबब बना हुआ है। लेकिन अब इस पाइन.आइसबर्ग का पहाड़ जो 10.12 जुलाई 2017 में तीन साल पहले अंटार्कटिका (दक्षिणी.ध्रुव) में टूटा था और उसमें दरारें पड़ने लगी हैं, जिसके बाद से वैज्ञानिक चिंता में आ गए हैं। क्योंकि खुले समुद्र में आते.जाते जहाजों के लिए यह टूटा हुआ आइसबर्ग खतरा बन सकता है। इसके साथ ही यह समुद्र के जलस्तर में भी इजाफा कर सकता है और कहीं अगर यह किसी तटीय शहर के करीब तेजी से टकराता है तो सुनामी जैसी बड़ी लहरें उठा सकता है। इससे आस-पास के इलाकों को भारी जनमानस, जीव-जंतुओं और अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंच सकता है।

वैदिक विज्ञान केंद्र लखनऊ के अध्यक्ष तथा स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेस के महानिदेशक प्रोफेसर भरत राज सिंह ने कहा कि 23 अप्रैल 2020 को यूरोपियन स्पेस एजेंसी के सैटेलाइट सेंटीनल.1 से ली गई पुोटो के अध्ययन से वैज्ञानिकों ने इस आइसबर्ग को ए-68ए नाम दिया है। वही पर



मुसीबत

वर्ष 2020 बनता जा रहा खतरों का कालखंड

टूटा हुआ यह आइसबर्ग खुले समुद्र में गर्म क्षेत्र की तरफ बढ़ रहा है और इसमें दरारें भी पड़ने लगी हैं, जो बेहद खतरनाक होने जा रही हैं।

वरिष्ठ पर्यावरणविद डा0 भरत राज सिंह ने बताया कि तीन साल पहले 10.13 जुलाई 2017 को पाइन. आइसवर्ग (ए-68) जब अंटार्कटिका पश्चिमी छोर से अलग हुआ था तब उन्होने बताया था कि वह 5890 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल अनुमानित मोटाई 650 मीटर और वजन 1.खरब (ट्रिलियन) टन का था। इसकी समुद्र में चलने की गति लगभग 3किलोमीटर प्रति घंटे की आंकी गयी थी।आज समुद्र में धीरे.धीरे पिघलकर 5100 वर्ग किलोमीटर का ही बचा है। ये इतना विशालकाय है कि इस पर न्यूयॉर्क के आकार के 5 शहर बराबर बसाये जा सकते हैं। बीते तीन वर्षों से यह वेड्डेल सागर में घूम रहा है

और इसी में से एक बहुत बड़ा टुकड़ा एक वर्ष बाद 2018 में अलग होकर बाहर निकला, जिसका नाम दिया गया है ए-68ए। लेकिन अब ए-68ए में से भी एक टुकड़ा अलग हुआ है जिसका नाम ए-68सी है। एंड्रियन ल्यूकमैन जो स्वानसी यूनिवर्सिटी में जियोलॉजी के प्रोफेसर हैं और 3.सालों से इस आइसबर्ग पर नजर रख रहे हैं। उन्होंने इस अलग हुए आइसबर्ग का नाम ए.68सी रखा। अलग हुये ए-68ए आइसबर्ग की लम्बाई 19 किलोमीटर है और आकार करीब 175 वर्ग किलोमीटर है। इसे देखने से ऐसा लगता है कि यह दक्षिणी अमेरिका के नीचे की तरफ दक्षिणी जॉर्जिया और दक्षिणी सैंचविच आइलैंड की तरफ जा रहा है। प्रोफ. सिंह यह भी बताते हैं कि इस आधुनिक युग में जब हम अपनी वैज्ञानिक खोज से पूर्वानुमान लगा लेते हैं, तब भी विश्व में कुछ विकसित और विकासशील देश जन.मानस को सही आँकड़ों से अवगत नहीं कराते हैं। डॉणू भरत राज सिंह ने बताया कि उक्त घटना की पूर्व में हीए उन्होंने अपनी किताब ग्लोबल वार्मिंग दूकाजेज इम्पैक्ट एंड रेमेडीजए जो क्रोशिया में अप्रैल 2015 में प्रकाशित हुयी थीए में उल्लिखित किया गया था कि अंटार्टिका (दक्षिणी ध्रुव) के पाईन आइसबर्ग के पक्षिमी क्षेत्र से एक विशाल



डॉ.भरत राज सिंह

दरार नासा के सैट.लाइट के चित्र से देखी गयी हैं इस पर नासा के वैज्ञानिकों का मत था कि इस प्रकार की दरारें बर्फ के पुनर्जमाव से भर जाती हैं। प्रोफ. सिंह का मत था कि अब दरार ऐसी स्थिति से गुजर चुकी है जिसे अपने पूर्व स्थान पर पुनः वापस पहुंचाना असम्भव है।अतः इसका टूटना निश्चित है। जो घटना

किताब के प्रकाशन के मात्र दो.वर्षों के अन्तराल पर घटित हो गयी थी।

प्रोफ. सिंह का कहना है कि पिछले तीन वर्षों में लगभग 800 वर्ग किलोमीटर पिघल गया और बचा हुआ 5100 वर्ग किलोमीटर का पाइन आइसबर्ग अभी केवल 3.वर्षों में 3285 किलोमीटर ही समुद्र में दक्षिणी अमेरिका तरफ आगे बढ़ा है। जबकि अंटार्टिका से दक्षिणी अमेरिका की दूरी 9805 किलोमीटर है।अतः इसे दक्षिणी अमेरिका पहुंचने में लगभग 6.वर्ष और लगेगे।अर्थात 2026 तक। इसके पिघलने के उपरांत समुद्र के पानी की सतह लगभग 3.2 मीटर (10.11फीट) बढ़ जायेगी और विश्व के कई निचले हिस्से डूब जायेगे और इसका बिना पिघला हुआ हिस्सा भी 2000.2700 वर्ग किलोमीटर का होगाए जिसके टक्कर और समुद्री तूफानों से भारी नुकसान से भी नकारा नहीं जा सकता है।